चिन्हारी
कमल नारायण

अब कोनो ल नी देखन रऊनिया डहन

शा स्त्र में कहे गए हे, जड़काला घरी मंखे ल रउनिया में रहना या घाम तापना चाही। एकर ले हमर तन ले जाड़ तो भागबे करथे, संगे संग विटामिन डी घलाव मिलथे। एकर ले हड्डी मजबूत होथे। शरीर ल ताकत संग बल मिल जाथे। आज के बेरा म कोनो ल रउनिया तापे बर फुरसत नई हे। हमन अपन तन बर बेरा नि निकाल सकत हन। एकर परिनाम ए होवत हे कि रोग राई ल अपन तन में बढ़ावा देवत हन। पहली सियान लइका, दाई बहिनी मन बिहनिया बेर उए तहने कमरा ओढ़े जाड़ भगाए बर चावरा में बईठे। पारा मोहल्ला के मन एक जगा सकला जाय। दुख सुख के गोठ होवय। एक दुसर के हीयाव करें। अब कहा पाबे। अब कोनो अईसने बईठ जाहि त तोर कर कुछु काम बुता नई हे का किथे। आज हमन ल रउनिया के वोतका जरुवत हे, जतका पहली रिहिस। त हमन रऊनिया तापे बर कंजूसी नी कर के सोज रूप में मिलत विटामिन डी ल ग्रहण करत अपन तन ल निरोगी बनावन।

लोक साहित्य
सरला शर्मा

हिन्दी काव्य म छत्तीसगढ़

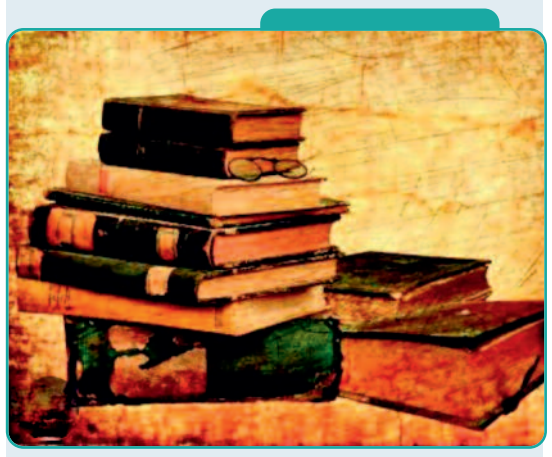

लो गन जऊन हिंदी अऊ प्रांतीय भासा कही के अलगाव वाला बात करथे त येह उचित नोहे। एकर ले भारतीय अखंडता खंडित होथे। सबो भासा म रचे साहित्य ह भारतीय साहित्य आय। ए प्रक्रिया में कभु कोनो अंचल विशेष बर लिखे उदगार कोती ध्यान जाना स्वाभाविक हे। आदि कवि वाल्मीकि रामायण में छत्तीसगढ़ी के बरनन करे हावय। तुरतुरिया आश्रम में माता सीता रीहिस। लोचन प्रसाद पाण्डेय जी प्रकृति खातिर लिखथे-

सरिता जल में प्रतिबिंब लखै,
शुद्ध कहीं जलपान करै।
कहीं मुग्ध हो निर्झर झरझर में,
घन कुंजन में तन ताप हरै।

मुकुटधर पाण्डेय रुख राई ला देख के लेखनी ल देखन -

विकसित सर के किंजल्क जालू,
शोभित उन पर निहार माल।
किस समय बंधु की आंखों से,
है टपक पड़ा यह प्रेम नीर।

पुस्तक समीक्षा

हमर गांव
(लइका मन के कविता)

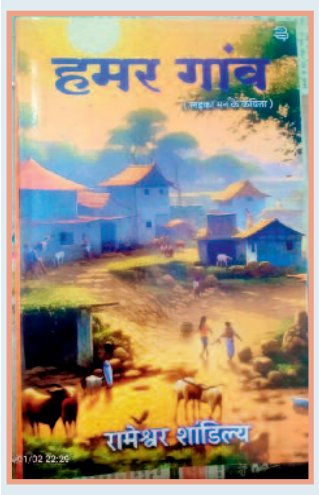

कृति के नाव
हमर गांव

लेखक
रामेश्वर शांडिल्य

प्रकाशक
बुक्स क्लीनिक, बिलासपुर

पुस्तक समीक्षा
विवेक तिवारी

मूल्य
150 रुपया

बा ल साहित्य के रचना कोनो लइका खेलवारी नोहय, काबर के एमा लइका मन के उम्मर, उंखर रुचि अउ सोंच के ध्यान रखना जरुरी रथे। संगे संग कविता म लइका मन बर सीख घलो होना चाही, जेखर ले उनला सही ज्ञान मिल सकय। ए जम्मो जिनिस ल ध्यान म रख के कवि ह "हमर गांव" नाव के पुस्तक के रचना करे हावंय । इंखर कविता मा लइका मनन ला लुभाये के 40 ठन स्वरचित कविता संग्रहित करे हावंय।

ए पुस्तक म जोराय कुछ कविता मन के बानगी देखव-

"जलदी जागव" –

घोड़ा बेंच झन सुतव जी। कुकरा बासत उठंव जी।
सुत उठ के कछु काम करव। जग म अपन नाम करव।

सहज बोध के उंखर रचना मन अमीर खुसरो के मुकरी कस लगथे। ये रचना मनन नान-नान हवै फेर एमा गंभीरता घलो हवै। ए पुस्तक के रचना मन हमर गुरतुर भाखा छत्तीसगढ़ी म हवैं। अउ छत्तीसगढ़ी म सार्थक कविता उही लिख सकथे जेन लोकजीवन म रचे-बसे होवय।

छत्तीसगढ़ अंचल के गांवों में खेती किसानी कार्यों से मुक्त होने के बाद किसान मनोरंजन के लिए मेला मड़ई का आयोजन करते हैं। यह ध्यान रखा जाता है कि जिस गांव में मड़ई की तिथि तय होती है उसके आसपास के गांवों में इस समय मड़ई का आयोजन नहीं किया जाता।

महासमुंद जिले का प्रसिद्ध कचना धुरवा मड़ई

मेला मड़ई : गौकरण मानिकपुरी

म ड़ई के दिन ग्राम के देवी देवताओं और डीही डोंगर की भी पूजा अर्चना की जाती है। रंग बिरंगी ध्वज लहराते गाजा बाजे के साथ ठाकुरों को परघाने का क्रम भी इस बीच चलते रहता है।इसी कड़ी में महासमुंद जिले के पिथौरा तहसील स्थित कचना या करिया धुरवा स्थल में प्रति वर्ष पौष पूर्णिमा को मड़ई मेले का आयोजन धूमधाम से किया जाता है। जहां मेले का आयोजन किया जाता है उस स्थल पर करिया धुरवा की प्रतिमा स्थापित है। इस स्थल पर लोगों की अपार आस्था है और वर्ष भर श्रद्धालु यहां अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए आते रहते हैं। पिथौरा, सिरपुर और गरियाबंद में करिया धुरवा से संबंधित लोक मान्यताएं और अनेक किंवदंती सुनने को मिलती हैं। इन धार्मिक मान्यता के स्थलों में भक्तों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इस मंदिर में भक्तों द्वारा ज्योति कलश भी प्रज्वलित की जाती है। स्थानीय लोगों का मानना है कि इस मंदिर में आस लेकर आए भक्तों की मांग अवश्य पूरी होती है। प्रमाणों के आधार पर मड़ई मेले के दिन मनोरंजन के साथ ही अपनी आस्था प्रकट अवश्य ही आते हैं।

करिया धुरवा के मंदिर प्रस्तर निर्मित बहुत सारी खंडित प्रतिमाएं सहेज कर रखी हुई हैं तथा इनमें घुड़सवार करिया धुरवा की प्रतिमा स्थापित है। वहीं सड़क के दूसरी तरफ़ धुरवीन भी घोड़े पर सवार होकर मंदिर में विराजमान है और यहां भी अनेक प्रस्तर निर्मित खंडित प्रतिमाएं रखी हुई हैं। ग्रामीण पुरुष एवं महिलाएं इन स्थानों पर नारियल पुष्प अर्पित कर धूप दीप प्रज्वलित कर सकाम पूजा पाठ करते हैं तथा मनोकामना पूर्ण होने के लिए देवों से प्रार्थना करते हैं। इस दिन यहाँ भक्तों की काफ़ी संख्या देखी जा सकती है।

धार्मिकः डा. देवी प्रसाद

अनेक तथ्यों को उजागर करता बंकेश्वर मंदिर

बिलासपुर से 55 मील दूरी पर ईशान कोण में तुम्माण स्थित है। तुम्मान को स्थानीय बोली में खोल या छिद्र कहा जाता है। इस खोल में एक या दो प्रवेश मार्ग होते हैं। यहीं बंकेश्वर का सुप्रसिद्ध मंदिर बंक ऋषि की स्मृति में बनाया गया था। शताब्दियों के थपेड़े खाकर भी इन भग्नावशेष से उनके अद्वितीय शिल्प कौशल देख कर आश्चर्य होता है। एक स्थान पर भगवान शिव के तांडव नृत्य की मुद्रा कला पूर्ण ढंग से उकेरी गई है। एक स्थान पर ब्रह्मा जी की मूर्ति खंडित है, समीप में उनका वाहन हंस मजे से खड़ा है। द्वार के दाहिनी ओर वामन भगवान गरुड़ पर आरूढ़ है। द्वार के ऊपर कीर्तिमुख को स्थापित करते हुए गणों की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं जो हाथ में पुष्पहार लिए हुए हैं। दक्षिण कोसल में हैहयवंशियों के राजत्वकाल में जिन मन्दिरों के निर्माण किए गए उनके द्वार पर नवग्रहों की मूर्तियां अवश्य प्रतिष्ठित रहती थी। द्वार के चौखट पर विष्णुजी के दशावतार की मूर्तियां उकेरी गई हैं। द्वार के निम्न भाग पर हाथ में घड़ा लिए गंगा और यमुना जी कच्छप पर विराजमान हैं। गंगा और यमुना के आजू बाजू द्वारपाल खड़े हैं लेकिन इनके हाथ काल बलि ने तोड़ दिए हैं। इसी तरह यहां के अन्य मंदिरों के कलाकृति की अपनी विशेषता है।

सुरता
वीरेन्द्र बहादुर सिंह

जुझारू नेतृत्व और व्यक्तित्व के धनी थे लाला जय नारायण

छु ईखदान के चर्चित व्यक्तियों में से एक लाला जय नारायण श्रीवास्तव जी रहे। आपको लोग लाला जी के नाम से जानते थे। आपके पिता का नाम गोवर्धन लाल श्रीवास्तव था, वे छुईखदान में सरकारी वकील थे। लाला जी की मैट्रिक तक की शिक्षा राजनांदगांव में हुई । आगे की पढ़ाई के लिए नागपुर चले गए। नागपुर में अध्ययन के दौरान वे साप्ताहिक समाचार पत्र नया खून से जुड़े तथा सी पी एंड बरार प्रांत के तत्कालीन गृह मंत्री और मध्य भारत की राजनीति के चाणक्य माने जाने वाले प द्वारिका प्रसाद मिश्र की नीतियों के खिलाफ आलोचनात्मक रपट लिखकर चर्चा में आए। बाद में वे उनके अत्यंत करीबी हो गए। महाविद्यालय शिक्षा पूरी होने के बाद वे सन 1966 में राजनांदगांव लौटे और सुरुचि प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना कर उनका संचालन किया। हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। आप राजनांदगांव नगर पालिका अध्यक्ष के साथ ही कांग्रेस पार्टी में विभिन्न पदों पर भी कार्य किए। लालाजी ने राजनीति का क्षेत्र चुना तो उनके छोटे भाई रम्मू श्रीवास्तव ने प्रखर पत्रकार और योग्य संपादक के रूप में अमिट छाप छोड़ी। उस समय लोग सिद्धांत की राजनीति करते थे तथा व्यक्तिगत संबंधों को आंच नहीं आने देते थे। यही कारण है कि राजनीतिक प्रतिद्वंदिता के कारण लाला जी अंचल के तत्कालीन समाजवादी नेताओं में मदन तिवारी, विद्याभूषण ठाकुर,धन्नालाल जैन और ठाकुर दरबार सिंह के परामर्शदाता थे। सन 1974 में एक सड़क दुर्घटना में उनका असामयिक निधन हो गया ।

लोक नाट्य
डा. तीर्थेश्वर सिंह

हिन्दुस्तानी थिएटर और मिट्टी की गाड़ी

हबीब तनवीर ने हिंदुस्तानी थियेटर के लिए लोक नाट्य मिट्टी की गाड़ी को चुना और देश विदेश सभी स्थानों में प्रदर्शन के माध्यम से धूम मचा दी। इन्होंने इस नाट्य में भारतीय संगीत और नृत्य परंपराओं का प्रयोग बड़ी सूझबुझ के साथ किया।

ह बीब तनवीर की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे अपनी विफलताओं से सीख लेते थे। हबीब तनवीर ने आदिवासियों के जीवन को आधार बना कर भी नाटक लिखे। इनके रंगकर्म के कई पक्ष हैं जिन पर भारतीय रंग समीक्षकों के साथ विदेशी रंग कर्मियों की दृष्टि भी प्रशंसात्मक रूप में पड़ी। इस संदर्भ में के नाथ रे ने लिखा है -हबीब तनवीर की कार्यप्रणाली की सफलता का सबसे प्रमुख पक्ष यह है कि उनमें नियंत्रण बनाए रखने की खासी क्षमता है, वे बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि नए विचारों द्वारा आंचलिक कलाकारों को आसानी से वशीभूत किया जा सकता है। लोक नाट्यों पर शहरी प्रभाव में इस बीच बहुत बुरा असर डाला है। वे कहते हैं -बहुत कुछ अब तक नष्ट हो चुका है, बहुत कुछ नष्ट होने के कगार पर है और बहुत कुछ नष्ट हो सकता है। इसलिए अपने कामों में रीति नीति में थोड़ा दखल देते हैं। इसके बाद आश्वस्त होकर तन्मयता के प्रस्तुति देते हैं। इस तरह सहजता और तन्मयता का अच्छा उदाहरण मंचों में देखने को मिलता है। इसका अच्छा इस मंचन में भी हम देखते हैं।